ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

आर्य समाज 150 मानव सेवा के स्वर्णिम वर्ष 1875-2025

वर्ष 48, अंक 11 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 6 जनवरी, 2025 से रविवार 12 जनवरी, 2025
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्यसमाज के सिद्धान्तों में यज्ञ-योग-सेवा-सत्संग-साधना और समर्पण की भांति स्वाध्याय को माना गया है अनिवार्य

स्वाध्याय से बढ़ता है आत्मबल - आइए, नियमित स्वाध्याय का लें व्रत

वैदिक सिद्धांतों में स्वाध्याय की महिमा अत्यंत महान है। क्योंकि स्वाध्याय ही वह साधन है जिससे व्यक्ति, परिवार और समाज के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। स्वाध्याय के माध्यम से व्यक्ति ईश्वर की वाणी वेदों के उपदेश, आदेश को शिरोधार्य करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होकर अपने जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य तक पहुंचने में सक्षम हो सकता है। स्वाध्याय से ही मनुष्य हजारों लाखों वर्षों पुराने इतिहास से परिचित हो सकता है, महापुरुषों के जीवन सिद्धांतों से शिक्षा प्राप्त कर सकता है।

किन्तु आजकल सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर अपना समय लगाकर लोग स्वाध्याय के महत्व को भूलते जा रहे हैं, परिणाम स्वरूप धर्म, संस्कृति और संस्कारों से विहीन होकर वीरता, पात्रता, अनुशासन, व्यवस्था, व्यवहार, शिष्टाचार में कमी आ रही है, लोग बनावटी और दिखावटी होकर निराशा, उदासी, हताशा, चिन्ता और भय आदि का शिकार होते जा रहे हैं। प्रस्तुत आलेख में वेद भगवान के अनुसार मनुष्य का आत्मा राजा है और मृत्यु भी उसे मार नहीं सकती.....अत: आर्य संदेश के इस लेख द्वारा अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानें और नियमित स्वाध्याय का संकल्प लेकर कल्याण मार्ग के पथिक बनें - सम्पादक

वर्तमान में मनुष्य भौतिक उन्नति के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ता जा रहा है। किंतु वैदिक मूल्यों की सांस्कृतिक संपदा को कुछ इस तरह पीछे छोड़ते जा रहा है, जैसे रेल यात्रा के समय स्टेशन पीछे छूटते जाते हैं। उन्नति की अंतहीन दौड़ में वैदिक संदेशों को हमने पढ़ना-सुनना, अमल में लाना छोड़ जैसे बिल्कुल छोड़ ही दिया है, जिसका परिणाम यह निकला कि आज इनसान वैभव के शिखर पर बैठकर भी अशांत है, बेचैन है, व्याकुल है। सारे साधन मनुष्य के पास हैं, लेकिन फिर भी इनसान खीझा हुआ, क्रोध में भरा हुआ, तनाव से तना हुआ, चिड़चिड़ा स्वभाव बनाए हुए पूरे ब्रह्मांड से असंतुष्ट नजर आता है। आज परिवार, समाज, देश तो क्या मनुष्य अपने स्वयं के गौरव की रक्षा भी नहीं कर पा रहा है। वह मारा-मारा फिर रहा है। इनसान भूल चुका है कि वह ईश्वर का अमृत पुत्र है, सबका पिता परमात्मा उसका भी पिता है, जो संसार का सबसे बड़ा राजा है और राजा के पुत्र में भी संसारिक राजा की भांति जीवन जीने की संभावना, उसके गुण, कर्म और स्वभाव को अपनाने पर ही प्रबल होती है।

आजकल मनुष्य अपने कर्म की ताकत को नहीं तौलता, परमात्मा की न्याय व्यवस्था पर विश्वास नहीं करता, जो मनुष्य अपने आपको बहुत समझदार समझता है- पीड़ाओं के समय संयम से काम नहीं लेता, अपनी विवेक शक्ति का इस्तेमाल नहीं करता। दुनिया की तरफ देखता है कि कहीं से कोई फरिश्ता आएगा और मेरे दु:खों को दूर कर देगा। जबकि सबके अंदर दैवीय शक्तियां विद्यमान हैं, जरूरत है उन्हें जगाने की, जरूरत है अपने स्वरूप को पहचानने की और जरूरत है कल्याण के मार्ग पर स्वयं कदम बढ़ाने की। दुनिया का कोई हाथ किसीको आगे नहीं बढ़ाता, आगे बढ़ाती है उसकी अपनी मेहनत और वेदज्ञान के रूप में परमात्मा की प्रेरणा। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को प्रतिदिन वेदों का स्वाध्याय करना चाहिए। क्योंकि उचित-अनुचित, सही-गलत और भले-बुरे का रहस्य स्वाध्याय से समझ आता है, स्वाध्याय से आत्मबल बढता है, वह स्वाध्याय ही जिससे हम अपने पूर्वजों के अनुभवों का लाभ लेकर कठिन परिस्थितियों का सरलता से समाधान कर कल्याण के पथ पर आगे बढ सकते हैं।

ऋग्वेद के दसवें मंडल के अड़तालीसवें सूक्त का पांचवा मंत्र है-

अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन।
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरव: सख्ये रिषाथन।।

मंत्र का भावार्थ- मैं इंद्र हूं, समस्त ऐश्वर्यों का स्वामी हूं, मैं किसी से हारने वाला नहीं हूं, मैं मृत्यु से भी पराजित नहीं होता। (ईश्वर भक्त मृत्यु के भय से मुक्त

- शेष पृष्ठ 3 एवं 7 पर

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला (1 से 9 फरवरी, 2025) प्रगति मैदान में

आर्यसमाज के वैदिक साहित्य का लगेगा वृहद स्टाल

पिछले 20 वर्षों से आर्यसमाज एवं महर्षि की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का अभियान निरन्तर है गतिशील। आर्यजनों से निवेदन प्रचार प्रचार और सहयोग के लिए उपरोक्त तिथियों का रखें ध्यान। स्वयं पधारें और अपने परिचितों के साथ स्टाल पर अवश्य ही पहुंचें और साहित्य खरीदकर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें। - संयोजक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में वैदिक विद्या केन्द्र पुडुचेरी (पाण्डिचेरी) में

चार दिवसीय सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर सम्पन्न

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती और आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के आयोजनों की श्रंखला में आर्यसमाज वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसार में संलग्न है। इन्हीं आदर्श और कल्याणकारी प्रकल्पों के प्रचार-प्रसार को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा समय-समय पर स्वाध्याय शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। अभी पिछले दिनों वैदिक विद्या केंद्र पुडुचेरी के विशाल और मनोहारी प्रांगण में 29 दिसंबर 2024 से 1 जनवरी 2025 तक आयोजित स्वाध्याय शिविर समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। जिसमें महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा रचित उनकी अनमोल रचना सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करने वाले शिवरार्थी दिल्ली के अतिरिक्त अन्य अनेक स्थानों से उपस्थित हुए। शिविर प्रवक्ता विनय जी ने प्रथम समुल्लास में वर्णित परमात्मा के सौ नामों की तार्किक ढंग से व्याख्या करते हुए परमात्मा का मुख्य नाम ओ३म् और 100 से अधिक नामों की संभावना व्यक्त की। द्वितीय समुल्लास में बालक-बालिकाओं की शिक्षा व्यवस्था, भूतप्रेत आदि का निषेध, जन्मपत्री की अप्रमाणिकता और सूर्य ग्रह नक्षत्र आदि पर अपने विचार रखे। तृतीय समुल्लास में वर्णित अध्ययन के विषय क्या हों? प्रणायाम, योगाआसन का महत्व, सन्ध्या व अग्निहोत्र, उपनयन की समीक्षा की, ब्रहमचर्य की उपयोगिता तथा पढ़ने-पढ़ाने

- शेष पृष्ठ 4 पर

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

6 जनवरी, 2025
से
12 जनवरी, 2025

देववाणी-संस्कृत

हे सोम! हमें पाप से सब ओर से बचा

वेद-स्वाध्याय

त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायतः। न रिष्येत् त्वावतः सखा।। -ऋ० 1/91/8
ऋषिः- राहूगणो गोतमः।। देवता-सोमः।। छन्दः-गायत्री।।

शब्दार्थ - सोम = हे सोम! **राजन्** = हे राजन्! हे असली राजन्! **त्वं नः** = तू हमारी **अघायतः** = पाप चाहने वालों से **विश्वतः** = चारों ओर से **रक्ष** = रक्षा कर। **त्वावतः सखा** = तेरे जैसे से मित्रता रखने वाला **न रिष्येत्** = कभी नष्ट नहीं होता।

विनय - हे सोमदेव! तुम्हीं वास्तव में हमारे राजा हो। यद्यपि संसार के मनुष्य-राजा भी जान-माल आदि की रक्षा करने के लिए ही होते हैं, परन्तु वे अल्पशक्ति राजा शासन की चाहे जितनी शक्ति रखते हों, तो भी हमारी पूरी तरह रक्षा नहीं कर सकते, परन्तु मुझे अपने जान-माल की ऐसी परवाह नहीं है, इनको तो मैं धर्म के लिए प्रसन्नता से जाने दूँगा, अतः हत्यारों और लुटेरों के आक्रमण से रक्षा पाने की मुझे कोई चिन्ता नहीं होती। मुझे तो चिन्ता है पाप के आक्रमण से रक्षा पाने की। इस पाप के आक्रमण से बचने की ही मुझे अत्यावश्यकता है और इस आक्रमण से तो, हे मेरे राजन्! मुझमें अन्दर से हुकूमत करनेवाले स्वामी! हे असली राजन्! तुम्हीं चारों ओर से मुझे बचा सकते हो। बड़े- से बड़ा श्रेष्ठ राजा भी अपने बाहरी सुप्रबन्ध से हमें पाप के आक्रमण से सर्वथा सुरक्षित नहीं कर सकता। इसीलिए हे राजाओं के राजा परमेश्वर! हम तुमसे प्रार्थना करते हैं कि तुम हमें पाप चाहनेवालों से सब ओर से रक्षित करो। हे सर्वशक्तिमान्! मैं तो अपने अन्दर तुम्हीं से सम्बन्ध जोड़ चुका हूँ, मुझे अब किसका डर है? तुझ-जैसे से अपना सम्बन्ध जोड़ने वाला- तुझ सर्वशक्तिमान् राजा की मैत्री पाया हुआ तेरा सखा-कभी नष्ट नहीं हो सकता। तेरी सर्वशक्तिमान् शरण में पहुँचे हुए को नाश कर सकने वाली वस्तु कहाँ से आएगी? परन्तु तेरा सखित्व पाने के लिए और ऐसा अमूल्य सखित्व पाकर उसको स्थिर रखने के लिए बस, पाप से सुरक्षित रहने की आवश्यकता है। इसलिए बारम्बार यही प्रार्थना है कि हमें पाप से चारों ओर से बचाइए- हमें पापा से सब ओर से बचाइए।

-:साभारः- **वैदिक विनय**

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

कुंभ मेला केवल पाप धोने का अवसर? ऐतिहासिक तथ्यों को न जानने वालों के प्रलाप की समीक्षा

सनातन धर्म रक्षक आर्य समाज - क्यों न जाए कुम्भ?

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में महाकुंभ मेले की शुरुआत होने में अब कुछ दिन ही बाकी हैं। यहां देश-विदेश के हर कोने से लोग उपस्थित रहे हैं। तथ्य बताते हैं कि इसका आयोजन करीब पिछले लगभग 2 हजार सालों से हो रहा है। उस काल के कुम्भ में मेले में किसी को भी परस्पर विरोधी विचार, मत या पंथ के प्रचार-प्रसार पर कोई रोक न थी। लेकिन वहां वही प्रचार कर सकता था जो शास्त्र सम्मत हो, विजेता विद्वान को पुरस्कार मिलता और वहां आई हुई जनता विजेता के विचारों के साथ चली जाती। किसी को इससे कोई विरोध नहीं होता था।

श्रमण और ब्राह्मण दोनों को परस्पर शास्त्रार्थ करने दिया जाता था। हालाँकि बाद में भी यहां सिर्फ वैष्णव, शैव, शाक्त, वामाचारी आदि सभी पंथों के साधु-संत जुटने लगे। ये सभी लोग परस्पर वाद-विवाद करते। जैन, बौद्ध साधुओं के भी शिविर लगते। किसी को भी यहां आने से मनाही नहीं रही। भारत में चाहे जो भी शासक रहा हो, किसी ने भी इस जमावड़े में किसी के भी आवा-जाही पर न रोक लगाई ।

किन्तु अब ज्योतिषपीठ प्रमुख स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने आर्य समाज के लिए कहा है कि जो लोग ऐसा नहीं मानते कि गंगा में स्नान करने से पाप धुल जाते हैं, उन्हें कुम्भ में नहीं आना चाहिए। उनके कहने का अर्थ है कुम्भ का अर्थ है सिर्फ गंगा स्नान और पाप से मुक्ति?

अगर गंगा स्नान की बात करें तो गंगा नदी को माँ का रूप इस कारण माना जाता है कि वह अपनी अविरल धारा से युगों-युगों से करोड़ों जीवों को जीवन देती आई है। उसके पानी से निरंतर खेतों की सिचाई होकर फसल लहलहाई और गंगा के किनारों पर ही सबसे पहले सभ्यताएं विकसित होकर फली-फूली। लेकिन किसी वेद, उपनिषद, दर्शन या गीता में यह वर्णन नहीं मिलता कि गंगा स्नान से मनुष्य के किए गए पाप मिट जाते हैं?

आखिर इतने बड़े शंकराचार्य जैसे पद पर आसीन स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने किस ग्रन्थ को पढ़ा है कि गंगा स्नान करने से पापों को मुक्ति मिल जाती है? चलो एक पल को स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद जी की पौराणिक स्नान से पाप मिटने वाली थ्योरी मान भी लें तो पौराणिक महाभारत के अनुसार पितामह भीष्म को गंगा का पुत्र माना जाता है लेकिन कुरुवंश में द्रोपदी चीरहरण से लेकर युद्ध वें उन्होंने कौरवों के साथ रहे, किन्तु अंतिम पलों में वो भी अपने किए कर्मो से नहीं बच सके। स्वयं उन्हें भी मृत्यु तक बाणों पर रहकर पीड़ा सहन करके मरना पड़ा। अगर गंगा अपने पुत्र के पाप ना मिटा सकी तो बाकी के पाप वह क्यों लेगी? इसका अर्थ यह है कि किए गए कर्म का फल भोगना पड़ता है।

दूसरा प्रयागराज में होने वाले अर्धकुंभ और पूर्ण कुंभ में सबसे पहले श्री पंचायती महानिर्वाणी अखाड़े के साधु सबसे पहले स्नान करते हैं। क्या स्वामी जी महाराज बता सकते हैं कि श्री पंचायती महानिर्वाणी अखाड़े के सभी साधु पापी हैं और वह पाप मुक्त होने के लिए स्नान करते हैं? क्या स्वामी जी महाराज बता सकते हैं कि लाखों संन्यासी अखाड़े कुंभ में करोड़ों तीर्थयात्रियों, मठों से जुड़े शंकराचार्य, मंडलेश्वर, महामंडलेश्वर और साधु संत क्या सिर्फ पाप मुक्त होने के लिए कुंभ में जाते हैं? या क्या वह सब पापी हैं?

अगर ऐसा है तो गंगा तो हमेशा बहती है, जब स्नान करके पाप मुक्त ही होना है तो 6 या 12 साल में कुंभ जैसे पवित्र आयोजन की जरूरत क्या है? किसी भी समय स्नान कीजिए, पाप मुक्त हो जाइए क्यों चार, छह या बारह वर्ष प्रतीक्षा करनी? और अगर मात्र

श्रमण और ब्राह्मण दोनों को परस्पर शास्त्रार्थ करने दिया जाता था। हालाँकि बाद में भी यहां सिर्फ वैष्णव, शैव, शाक्त, वामाचारी आदि सभी पंथों के साधु-संत जुटने लगे। ये सभी लोग परस्पर वाद-विवाद करते। जैन, बौद्ध साधुओं के भी शिविर लगते। किसी को भी यहां आने से मनाही नहीं रही। भारत में चाहे जो भी शासक रहा हो, किसी ने भी इस जमावड़े में किसी के भी आवा-जाही पर न रोक लगाई ।

किन्तु अब ज्योतिषपीठ प्रमुख स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने आर्य समाज के लिए कहा है कि जो लोग ऐसा नहीं मानते कि गंगा में स्नान करने से पाप धुल जाते हैं, उन्हें कुम्भ में नहीं आना चाहिए। उनके कहने का अर्थ है कुम्भ का अर्थ है सिर्फ गंगा स्नान और पाप से मुक्ति?

स्नान कर लेने से पुण्य और मोक्ष की प्राप्ति होती तो फिर सनातन धर्म में ईश्वर की प्राप्ति के लिए योग, साधना, ध्यान, जप, तप, यज्ञ और दान का वर्णन क्यों मिलता? गंगा स्नान सनातन धर्म में विज्ञान का विषय है, गंगा का पानी जब हिमालय से आता है तो कई तरह के खनिज और जड़ी-बूटियों का असर इस पर होता है, इससे इसमें औषधीय गुण आ जाते हैं और स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। लेकिन अगर बुरे कर्म करके गंगा स्नान से इंसान पाप मुक्त होता तो फिर गीता में योगेश्वर श्री कृष्ण जी महाराज ने जो कर्म और फल पर इतना ज्ञान दिया, क्या वह व्यर्थ है?

अगर गंगा स्नान से पाप धुल जाते तो उसमें रहने वाली मछली तो कब की मोक्ष प्राप्त कर जाती और अगर गंगा में स्नान करने से पाप दूर होते हैं तो सभी बलात्कारियों को, अपराधियों को, आतंकवादियों को गंगा में गोते लगवा दो और छोड़ दो, उनको जेल में क्यों रखते हो? और क्या स्वामी जी महाराज ने भी पाप किए हैं, जो वह उन्हें धोने के लिए गंगा स्नान करते हैं?

गंगा स्नान सनातन धर्म में विज्ञान के साथ आस्था का विषय हो सकता है, लेकिन पाप करना और नहाकर पाप मुक्त होना ये धारणा जिसने चलाई शायद उसने वेद उपनिषद नहीं पढ़े होंगे क्योंकि शास्त्र अनुसार कर्म कोई भी हो फल भोगना पड़ता है।

वैसे स्वामी जी महाराज का हम सम्मान करते हैं, वो सनातन धर्म के एक बड़े पद पर आसीन हैं, उनकी अपनी गरिमा है, किंतु सनातन के इस महाकुंभ की परिभाषा उसका महत्व इतना व्यापक और विशाल है कि इसे मात्र स्नान तक में सीमित करना स्वामी जी महाराज की ओर से कुंभ की गरिमा को चोट देने जैसा है।

स्वामी जी महाराज को अपने विचारों से अलग लोगों को आमंत्रित करना चाहिए, शास्त्रार्थ करना चाहिए। अगर स्वामी जी महाराज साबित करें कि गीता और वेद में कर्मफल पर जो लिखा है वह झूठ है और स्वामी जी की पाप धोने वाली थ्योरी सही है, बुलाएं शास्त्रार्थ में उन्हें हराएं और अपना शिष्य बनाएं। अगर साबित नहीं कर पाए तो उनके शिष्य बन जाएं, दरअसल यही तो होता था प्राचीन काल में कुम्भ मेले में।

दरअसल कुम्भ मेला एक तरह से तत्कालीन भारत के सभी मतों और विचारों के समागम का प्रयास था। यहां शास्त्रार्थ होता था और एक नया रास्ता निकलकर आता था। "वादे-वादे जायते तत्त्वबोध:" यानि संपूर्ण जगत में व्याप्त प्रतिस्पर्धा और श्रेष्ठता के दंभ के कारण अनेक कमियां आ जाती हैं, जिन्हें आपसी संवाद एवं सहमति से ठीक किया जा सकता है। यानि कुम्भ में सब मत विचारों वाले आस्तिक, नास्तिक, बौद्ध, जैन

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

होते हैं) इसलिए मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए तथा कल्याणकारी ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिए मुझसे (प्रभु से) कामना करो। हे मनुष्यो! मेरे प्रति (प्रभु के प्रति) मित्रभाव को कभी क्षीण मत होने दो।

मंत्र का पहला चरण -**अहम् इन्द्रः न परा जिग्य** अर्थात् मैं इंद्र हूं, राजा हूं, किसी से हारने वाला नहीं हूं। वेद की यह घोषणा हम मानकर चलें कि हम किसी से पराजित नहीं हो सकते-न अपनी समस्याओं से, न बीमारियों से, न कष्ट-क्लेशों से, न भय दिखाने वाले तत्वों से, न निराशाओं से। अगर मनुष्य अपनी धरणा यह बना ले कि मुझे किसी से हारना नहीं है और उसी के अनुसार कार्य व्यवहार करे तो वह अपने क्षेत्र में विजय प्राप्त करता रहेगा। किंतु अगर किसी कारण से उसके भीतर निराशा का जन्म हो गया तो चाहे वह शरीर से कितना ही बलवान हो, धनवान हो, गुणवान हो, उसे भीतर तक हिलाकर रख देगी, उसकी सफलता को निराशा रोककर खड़ी हो जाएगी।

एक व्यक्ति हमेशा चारपाई पर ही लेटा रहता था, कभी उठता नहीं था। उसकी बीमारी का कुछ पता नहीं चल रहा था। बाद में पता चला कि उसकी बीमारी क्या थी? दरअसल एक बार वह आदमी कुएं पर पानी पी रहा था, तो उसे पानी पिलाने वाली बहनों ने मजाक में कह दिया कि तेरे पेट में छोटी-सी छिपकली चली गई, जबकि वह असल में एक छोटा सा पत्ता था, जो कुएं के पास खड़े पेड़ से गिरा था और उसके पेट में चला गया। उस आदमी के दिमाग में यह बात बैठ गई कि मेरे पेट में छिपकली चली गई, अब मैं ठीक होने वाला नहीं हूं। छः महीने तक वह व्यक्ति बिस्तर पर रहा और जब किसी से ठीक नहीं हुआ तो एक वैद्य ने, जिसकी गर्दन कांपती रहती थी, उस बीमार व्यक्ति का पूरा इतिहास सुना और सुनने के बाद कहा कि बेटा! अब तू ठीक हो जाएगा, क्योंकि अब छिपकली के निकलने का समय आ गया है।

उसने उसकी बहन को बुलाया और कहा तू आज फिर उस कुएं पर जाकर इसे पानी पिला, शायद छिपकली निकल जाए। जैसे ही वह व्यक्ति अंजलि बनाकर पानी पीने बैठा तो पीछे से वैद्यजी ने जोर का थप्पड़ लगाया और कहा कि देखो, वह निकली छिपकली। कितनी बड़ी होकर निकली है। अगले दिन से वह आदमी धीरे-धीरे ठीक होने लगा। महीने भर बाद देखा कि वह आदमी खूब तेजी से दौड़ रहा है। न किसी ने छिपकली पेट में जाते देखी, न बाहर आते। मनुष्य का मन ऐसा है कि यदि कोई बात इसमें बैठ गयी तो वह असंभव को भी संभव बना लेता है।

एक बार किसी व्यक्ति को निराश कर दीजिए फिर वह कुछ करने योग्य नहीं रह जाएगा। किसी स्वस्थ व्यक्ति के दिमाग में यह बात भर दीजिए कि वह बीमार है और फिर अच्छे-से-अच्छा डॉक्टर भी उसका इलाज नहीं कर पाएगा। भय का भूत मनुष्य अपने भीतर खुद जगाता है। निराशा की राक्षसी को आप अपने अंदर खुद पैदा करते हैं। चिंता की डायन कहीं और से नहीं आती, आपके अंदर से ही पैदा होती है। इसीलिए मंत्र का संदेश सुनिए, पढ़िए और उसे अमल में ले आइए, स्वयं से कहिए कि मैं साधारण नहीं हूं, असाधारण हूं। मैं राजा हूं, मैं किसी से हार नहीं सकता। यह मानकर चलिए कि भगवान् ने आपको अपने अंश के रूप में बनाया है और आप स्वयं अपने स्वामी हैं।

जब तक मनुष्य अपने स्वरूप को नहीं समझता तब तक वह डर-डर कर जीता है, डरना ही जीवन की सबसे बड़ी हार है, जीवन में निर्भय होकर ही आप जीत सकते हैं। वैसे यह द्वंद्वों का संसार है, यहां सर्वत्र भय व्याप्त हैं। लेकिन भय इंसान की शक्ति भी है और शक्ति का हरण करने वाला भी है। वकील, पुलिस, डॉक्टर, ज्योतिषी मनुष्य के भय को जवान बनाए रखते हैं और स्वयं उस भय का लाभ उठाते हैं, कमाई करते हैं। भय एक मानवीय कमजोरी है-सौंदर्य को बुढ़ापे का भय है, धनी को निर्धनता का भय है, बलशाली को निर्बलता का भय है- मतलब डर कहीं-न-कहीं, किसी-न- किसी रूप में सर्वत्र व्याप्त है। भय से बच पाना बहुत कठिन है।

आप यदि भय से मुक्ति चाहते हैं तो सबसे पहले यह मानना चाहिए कि आप एक आत्मा हैं, जो नित्य है, अविनाशी है। मंत्र का अगला भाग है- **न मृत्यवे अवतस्थे कदाचन।** मंत्र के इस भाग में

- जारी पृष्ठ 7 पर

परिवर्तन पुस्तक

परिवर्तन : आता नही है - लाया जाता है। भूमिका

गतांक से आगे -

"सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए" वाक्य छोटा-सा है, सरल भी है पर इसकी गहराई इतनी अधिक है कि कुछ गिने-चुने महानुभाव ही उस गहराई में पहुंचने की योग्यता और क्षमता रखते हैं या कहें कि पहुंच पाते हैं। इस अकेले वाक्य में समस्त विश्व की शान्ति एवं मानव मात्र की उन्नति का मार्गदर्शन निहित है।

इस गहरे वाक्य को लिखने वाले महान् चिन्तक, विचारक, परिवर्तन क्रान्ति के सूत्रधार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को उनकी 200वीं जयन्ती पर शत-शत नमन।

वास्तव में 19वीं शताब्दी के महान् ऋषि, वेद भक्त, राष्ट्र भक्त, महर्षि दयानन्द जी ही थे, जिन्होंने भारत की परिवर्तन क्रान्ति की नींव रखी, जिस नींव पर आज स्वतन्त्र भारत का विशाल भवन खड़ा है। उनकी इतनी सूक्ष्म दृष्टि, अद्भुत विद्वता, निर्भय जीवन, सत्य के प्रति समर्थन, विराट संकल्पशक्ति ही थी जिसने सदियों से सोए भारत के स्वाभिमान को जगाया और उसके जनमानस को अपने महान् लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संकल्पबद्ध कर दिया।

19वीं शताब्दी की बात करें तो भारतवर्ष के जिस प्राचीन वैभव और गौरव को पूरे तौर पर भुलाया जा चुका था और तत्कालीन पढ़ा-लिखा वर्ग भी भारत की प्राचीन संस्कृति पर अभिमान करने के स्थान पर उससे घृणा-सी करने लगा था और उस समय अंग्रेजी सत्ता को ही अपना वास्तविक भाग्य विधाता मानकर उसी दिशा में तेज बहाव के साथ बहने लगा था। यदि आज हम भारतीय प्राचीन वैभव पर गौरव करते हैं, तो ये परिवर्तन-उस बहाव को रोककर विपरीत दिशा में लाने का महानतम और गुरुतर कार्य करने का श्रेय इतिहास किसी को देना चाहेगा तो तथ्यों और सच्चाई के साथ नाम केवल एक ही होगा ऋषि दयानन्द, ऋषि दयानन्द और ऋषि दयानन्द आखिर क्यों हम ऐसा कह रहे हैं? क्यों हम ऐसा लिख रहे हैं?

क्या ऐतिहासिक तथ्यों और सच्चाई जाने बिना इस बात को मानना उचित और न्याय संगत होगा? हमें लगता है कि, नहीं, उन तथ्यों को जाने बिना आप उपरोक्त वाक्यों से सहमत हों, ऐसा कहना उचित नहीं। पर इस पुस्तक में उल्लिखित कार्यों/तथ्यों इतिहास को जानने के पश्चात् हम अवश्य कहेंगे कि आप इस पर विचार करें। यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि इतिहास से सीख न लेने वालों के लिए इतिहास दोहराता है।

इतिहास अपने आप में उस कठोर पत्थर की भांति है जिसके ऊपर चाहे जितनी धूल पड़ती रहे, जमती रहे, वह दिखना बन्द हो जाए, उसकी कल्पना भी कोई न कर सके कि इस मिट्टी के नीचे कोई पत्थर होगा। पर जब कोई खोजी, यह जानकर कि यहां एक मजबूत चट्टान थी और उस धूल-मिट्टी के ढेर को हटाना शुरु करेगा तो एक समय ऐसा अवश्य आएगा कि वह धूल-मिट्टी हटाकर उस चट्टान को खोज लेगा। काले बादलों के आ जाने पर सूरज की रोशनी कुछ समय के लिए कम हो जाती है पर समाप्त नहीं होती। ठीक वही स्थिति ऋषि दयानन्द के जीवन, उनके कार्यों और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज के कार्यों को लेकर भी रही। इतिहास लेखकों द्वारा या खासकर पाठ्य पुस्तकों में उनके जीवन-कार्यों को जिस तरह सम्मान स्थान दिया जाना चाहिए था, वह कभी नहीं मिल पाया, जिसके चलते एक बड़ा वर्ग उस जानकारी से वंचित रहा और एक वर्ग ने उनकी कुछ बातों को नकारात्मक रूप में बताने के लिए भरपूर प्रयत्न किया, परन्तु उन जैसे महान् तेजस्वी व्यक्तित्व का जिस प्रकार से परिचय समस्त मानव जाति के कल्याणार्थ होना चाहिए था, वह नहीं हो सका। उनके शिष्यों ने अपनी पूरी शक्ति उनके आदेशानुसार किए जाने वाले कार्यों में झोंकी, परन्तु प्रचार में वे कहीं पीछे ही रहे।

खैर! समय कभी-कभी अपने आप अवसर प्रदान करता है। उस महान् ऋषिवर की 200वीं जयन्ती शायद ऐसा ही अवसर है। आने वाला समय हमारा प्रतीक्षा कर रहा है। समय के साथ-साथ चुनौतियां भी। अतः उनका सामना हम बेहतर तरीके से कर सकें, इसके लिए जरूरी है कि हम कुछ समय अपने अतीत में जाएं और विचारपूर्वक सोचें कि आने वाले समय की चुनौतियां, क्या 150 वर्ष पूर्व की चुनौतियों से ज्यादा हैं तो हमें उत्तर मिलेगा, शायद नहीं। ऋषि दयानन्द जी के जीवन/कार्यों और दर्शन को समझने से पूर्व हमें इतिहास पर दृष्टि डालनी होगी। प्रस्तुत पुस्तक में इन सारे विषयों पर हम चार/पांच चरणों में विचार करेंगे-

सृष्टि के आरम्भ से

पहला - आदि सृष्टि (सृष्टि के आरम्भ से) महाभारत के युद्ध से पूर्व का गौरव काल (5000 वर्ष पूर्व का)

दूसरा - महाभारत के युद्ध से कुछ समय पूर्व बनी परिस्थितियां एवं महाभारत के युद्ध के परिणाम।

तीसरा - महाभारत के पश्चात् से 18वीं और 19वीं सदी तक का भारत।

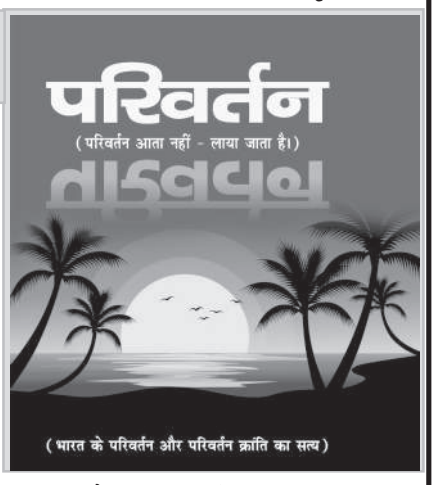

चौथा - महर्षि दयानन्द जी के समय की परिस्थितियां ओर उनके द्वारा किया गया परिवर्तनकारी कार्य।

पांचवां - वर्तमान युग की उन चुनौतियों/समस्याओं की चर्चा और समाधान के तत्व जो हमारे मूल अस्तित्व को पूरी तरह समाप्त करने की तैयारी में है।

पुस्तक के अन्त में विशेष परिशिष्ट भी दिए गए हैं जो विषय के विस्तार में सहायक होंगे-

(1) महर्षि द्वारा स्थापित आर्यसमाज का विश्व में फैला वर्तमान संगठन और सेवा कार्य।

(2) महर्षि दयानन्द के शिष्यों की श्रृंखला का संक्षिप्त परिचय।

- विनय आर्य, महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

- क्रमशः

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

आर्य समाज 150 — मानव सेवा के — 1875-2025

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

6 जनवरी, 2025
से
12 जनवरी, 2025

200 वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

साप्ताहिक सत्संग में सपरिवार भाग लेने और नियमित स्वाध्याय का संकल्प लें आर्यजन – विनय आर्य

स्त्री आर्यसमाज लेखू नगर का तीन दिवसीय कार्यक्रम संपन्न

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जन्म शताब्दी आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों के अंतर्गत स्त्री आर्य समाज लेखू नगर, त्रिनगर की ओर से 3 से 5 जनवरी 2025 तक तीन दिवसीय भजन संध्या का कार्यक्रम आर्य समाज के प्रधान एवं निगम पार्षद श्री अजय रवि हंस की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री विनय आर्य जी महामंत्री (दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) ने उदबोधन में आर्य समाज के इतिहास के बारे में बहुत ही सरल शब्दों में बहुत ही गहरी जानकारी उपलब्ध कराई और किस तरीक़े से अपने आप को जागृत करने और अपने परिवार को अधिक से अधिक समय देने और स्वाध्याय, सत्संग करने का संकल्प दिलवाया। आचार्या डॉ कल्पना जी ने भी बच्चों के विषय में बहुत सुन्दर विचारों को रखा। श्री दिनेश पथिक जी के मधुर भजनों का सभी आर्य जनों ने आनन्द उठाया और रविवार को पांच कुंडीय यज्ञ का आयोजन भी किया गया। जिसके ब्रह्मा आचार्य यदुनाथ शास्त्री जी थे। कार्यक्रम में समाज के कई गणमान्य व्यक्तियों जैसे श्री जोगेन्द्र खट्टर जी (महामंत्री अखिल भारतीय दयानंद) श्रीमती मीनू गोयल (निगम पार्षद त्रिनगर) श्री मनीष भाटिया जी (कोषाध्यक्ष आर्य केन्द्रीय सभा) जी भी अपने विचार रखे। इस कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन महामंत्री श्री अजय कालरा जी द्वारा किया गया। सभी धर्म प्रेमी सज्जनों और आर्य समाज के अधिकारियों, ईश्वर पाल आर्य, नवीन सेठी जी, अजय भाटिया जी, हर्ष वर्धन आर्य जी, डॉ तृप्ति शास्त्रीजी, कुसुम लता जी, वसुधा जी, कविता कालरा जी, राजेश सिंघल, संजय आर्य, अनिल गुप्ता जी, बृजेश आर्य, नरेंद्र कालरा, पवन जी, सदानंद आर्य जी, संजय सैनी, अरविंद हंस, आशीष जी, तुलसी प्रजापति, अनिरुद्ध जी ने इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर, अपना विशेष योगदान देकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया और अंत में मंत्री तृप्ति शास्त्री जी ने सबका धन्यवाद किया। – *मन्त्री*

प्रथम पृष्ठ का शेष

दिल्ली सभा द्वारा वैदिक विद्या केंद्र पुडुचेरी में चार दिवसीय सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर....

सभा द्वारा विभिन्न स्थानों पर वर्ष में चार बार आयोजित किए जाएंगे स्वाध्याय शिविर

की विधि पर प्रकाश डाला। चतुर्थ समुल्लास में समावर्तन पर विचार रखते हुए दूर देश के विवाह के, गौत्र बचाने के विवाह में स्त्री पुरुष परीक्षा के लाभ बतायें। आठ प्रकार के विवाहों (1) ब्रह्मा, (2) देव, (3) आर्ष, (4) प्रजापत्य, (5) असुर, (6) गन्धर्व, (7) राक्षस, (8) पिशाच की चर्चा करते हुए प्रथम चार को स्वीकार्य माना तथा अंतिम चार का त्याज्य बताया। अल्प आयु में विवाह को निषेध, स्त्रीपुरुष के व्यवहार, पंच महायज्ञ, ग्रहस्थ धर्म, पाखण्ड तिरस्कार, पण्डित के लक्षणों, मूर्ख के लक्षणों, पुनर्विवाह और नियोग व्यवस्था पर अपना उपदेश दिया। पंचम समुल्लास में वानप्रस्थ ओर संन्यास विधि पर उपदेश देते हुए बताया कि अपनी जरूरतों को सीमित करना, परिवार में अनावश्यक दखल न देना वानप्रस्थ है। छठे समुल्लास में राजा के धर्म, योग्य राजा के लक्षण व दण्डव्यवस्था पर गहन चिन्तन प्रस्तुत करते हुए बताया कि जैसे मधुमक्खी अनेकों फूलों से थोड़ा-थोड़ा शहद एकत्र करती है ठीक इसी प्रकार से राजा को भी थोड़ा-थोड़ा कर (टैक्स) जनता से वसूल करना चाहिए, जिससे उन पर बोझ न पड़ें। युद्ध व्यवस्था, दण्ड व्यवस्था, व्यापार आदि पर विचार रखें। सप्तम समुल्लास में वर्णित ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना पर विचार रखते हुए अवतारवाद को निषेध बताया। आठवें, नवम् व दशम समुल्लास में क्रमशः वर्णित सृष्टि की उत्पत्ति, विद्या-अविद्या, बन्धन और मोक्ष तथा आचार व्यवहार एवं भक्ष्य-अभक्ष्य पर विचार रखे। साथ ही विनय आर्य ने शिविरार्थीयों की शंकाओं का समाधान व्यावहारिक व लौकिक उदाहरणों, तार्किक ढंग, सरल एवं बोधगम्य शैली में किया। सभी शिविरार्थियों ने पूर्ण मनयोग से सभी कक्षाओं (सत्रों) में हिस्सा लिया।

स्वाध्याय एवं योग साधना शिविर में कुल 80 महानुभाव सम्मिलित हुए जिसमें दिल्ली से 60 आर्यजनों ने हिस्सा लिया। प्रातः कालीन बेला में व्रतिका आर्य जी द्वारा योग व आसनों को करवाया गया। सांय में सन्ध्या व ध्यान का सत्र प्रतिदिन विद्या निकेतन में आयोजि हुआ। प्रतिदिन रात्रिकालीन स्वाध्याय सत्र का आरम्भ भजनों के माध्यम से हुआ, जिसमें राजवती पांचाल, अशोक गोयल, चन्द्र प्रकाश आर्य, अंशू आर्या, देवेन्द्र सचदेवा, शशि तंवर, समापन सत्र के अवसर पर निम्नलिखित महानुभावों ने सत्यार्थ प्रकाश पर अपने विचार रखें। सुमेधा गुप्ता, तेजवीर आर्य, प्रदीप आर्य, अनिल देशवाल, सरोंज साहनी, सक्षम गोयल, रमेश आर्य, जगपाल आर्य, अविनाश वशिष्ठ। इस अवसर पर देवेन्द्र सचदेवा, सुधीर गुप्ता, ओमदत्त पांचाल का शिविर में सहयोग हेतु पीत वस्त्र से आशीर्वाद दिया गया। धर्मपाल आर्य, धर्मेन्द्र आर्य, रवि छिक्कारा, सरल देवी, वीरमती, शांति, गजेन्द्र त्यागी का धन्यवाद किया। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के उपप्रधान हरिओम बंसल सपत्नी व मंत्री ज्योति ओबेरॉय भी सपत्नीक उपस्थित हुए। डॉ. मुकेश आर्य ने वैदिक विद्या केन्द्र के समस्त अधिकारियों, आवास व्यवस्था हेतु मुनि शील प्रिय, भोजन हेतु शिव कुमार आर्य तथा गुरूकुल सरंक्षक पीयूष आर्य एवं सचालिका व्रतिका आर्या का उनमुक्त कंठ से धन्यवाद ज्ञापन किया।

– डॉ. मुकेश आर्य, संयोजक

स्वामी श्रद्धानंद जी का 98वां बलिदान दिवसः शोभायात्रा का शेष समाचार

स्वामी श्रद्धानंद बलिदान भवन नया बाजार में सर्वप्रथम आचार्य श्री सहदेव जी के ब्रह्मतत्व में श्रीमती प्रेमलता सरीन, श्रीमती कामिनी एवं श्री नरेंद्र वर्मा तथा श्रीमती नीतू एवं श्री नितेश यज्ञमान बनें और उन्होंने आहुतियां देकर उस महान आत्मा को स्मरण किया। तदोपरांत आर्य समाज के मुर्धन्य सन्यासी स्वामी प्रवणानंद जी के नेतृत्व में विशाल शोभायात्रा का शुभारंभ हुआ।इस विशाल शोभा यात्रा की अग्रणी पंक्ति में ओ३म् का झंडा लेकर सर्वश्री प्रभा आर्य, हर्ष आर्य, अर्पिता चौधरी, आदर्श मेहता, कौशल्या देवी, आर्या मीमांसक पांचाल, समृद्धि सोलंकी तथा साधु वेश में सत्यार्थ प्रकाश लेकर श्री आशीष अरोड़ा चल रहे थे। उसके उपरांत माननीय साधु संतों के सानिध्य में आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के अधिकारी, विशाल शोभायात्रा का बैनर लेकर, सर्वश्री सुरेंद्र कुमार रैली, प्रधान, कीर्ति शर्मा, अरुण प्रकाश वर्मा, जोगिदर खट्टर आर्य, हरि ओम बंसल, (सभी उपप्रधान) आर्य सतीश चड्ढा, महामंत्री, सरोज यादव, सुरेन्द्र चौधरी, संजीव खेत्रपाल, विनय आर्य महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, कर्नल रमेश मदान (प्रधान), राकेश आर्य (मंत्री) वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली, हनुमान अन्य मान्य विभिन्न समाजों के अधिकारियों के साथ उस पथ की ओर बढ़ी, जिस पथ से 98 वर्ष पूर्व स्वामी श्रद्धानंद जी का पार्थिव शरीर लेकर आर्य जन आगे बढ़े थे। शोभायात्रा में विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थी, आर्य वीर दल एवं वीरांगना दल के वीर – वीरांगनाएं, गुरुकुलों के ब्रह्मचारी – ब्रह्मचारिणियां भारी संख्या में सम्मिलित हुए।

– सतीश चड्डा, महामन्त्री

आर्यसमाज हडसन लाइन में मंगल कामना यज्ञ

आर्य समाज एक विश्व व्यापी परिवार है। यूं तो समस्त आर्य समाजों में दैनिक आदर्श गतिविधियां संचालित होती ही हैं, इसके अतिरिक्त साप्ताहिक सत्संग का अपना विशेष महत्व होता है। 5 जनवरी 2025 को आर्य समाज किंग्जवे कैंप, दिल्ली द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संग में समाज की वरिष्ठ सदस्या, दिल्ली विश्वविद्यालय से 31 दिसंबर 2024 को प्रोफेसर पद से सेवा निवृत्त होने पर डॉ. प्रतिभा लूथरा जी ने अपने परिवार और इष्ट, मित्रों के साथ मिलकर यज्ञ किया और विश्व मंगल की कामना की। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य डॉ सत्यकाम वेदालंकार जी के निर्देशन में वहां पर संचालित गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने कराया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य

मानव सेवा और परोपकार - सबसे बड़ा यज्ञ - धर्मपाल आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित नारी उत्थान के प्रकल्पों में सहयोग करेंगी डॉ. प्रतिभा लूथरा

जी, आर्य समाज के प्रधान श्री सुरेंद्र पाल जी एवं अन्य अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित थे। डॉ प्रतिभा लूथरा जी सहित लूथरा परिवार को और सभी यजमानों को पुष्प वर्षा करके आशीर्वाद दिया। श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए अपने संबोधन में आर्य समाज किंग्जवे कैंप के अधिकारियों और कार्यकर्ताओं को सुंदर आयोजन के लिए बधाई दी तथा डॉक्टर प्रतिभा लूथरा जी को सेवानिवृत होने पर और अधिक सक्रिय होकर मानव कल्याण तथा नारी उत्थान एवं सशक्तिकरण के लिए योगदान देने की बात कही। आपने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित सेवा प्रकल्पों में आर्य महिला स्वरोजगार योजना का संक्षिप्त परिचय देते हुए, डॉ प्रतिभा लूथरा जी को इस कार्य में सहयोग करने के लिए कहा, जिसको डॉ प्रतिभा जी ने सहर्ष स्वीकार किया, उपस्थित आर्यजनों ने तालियां बजाकर स्वागत किया। इस अवसर पर गुरुग्राम से पधारे श्री सुरेंद्र पाल रस्तोगी जी, एस.एच.ओ. और लूथरा परिवार को प्रधान जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अमर वाक्य की पुस्तक भेंट की। प्रेम सौहार्द के वातावरण में सभी ने भोजन ग्रहण किया और एक दूसरे को बधाई देते हुए प्रस्थान कर गए।

– सुरेन्द्र पाल सिंह, प्रधान

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती पर जारी स्मृति डाक टिकट

आर्य संस्थाएं अधिक से अधिक खरीदकर करें प्रयोग

भारतीय डाक India Post

विशेष अनुरोध - सरकार द्वारा जारी किए जाने वाले स्मृति डाक टिकट सीमित संख्या में और एकमुश्त केवल बार ही प्रकाशित किए जाते हैं। अत: समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य संगठनों, विद्यालयों, गुरुकुलों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं से निवेदन है कि अपने पास स्मृति रूप में डाक टिकट रखने तथा जन साधारण में प्रचार-प्रचार के लिए अधिकाधिक संख्या में खरीदकर प्रचार करें, अपने दैनिक पत्र-व्यवहार, स्पीड पोस्ट, रजिस्टर्ड डाक आदि में प्रत्येक स्थान पर उपयोग करें, जिससे कि हजारों-लाखों आखों और हाथों से होते हुए यह प्रचारित हो और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म वर्ष की स्मृति रूप में सुरक्षित रहे।

आप अपनी संस्था के लिए जितनी डाक टिकटें प्राप्त करना चाहते हैं, कृपया उसकी संख्या के अनुसार अपनी सहयोग राशि 5/- प्रति डाक टिकट की दर से निम्नांकित बैंक खाते में जमा करा दें या राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते भेजें।

DELHI ARYA PRATINIDHI SABHA

A/c No. : 2009257009039   IFSC :CNRB0002009   Canara Bank New Delhi

नोट – यह डाक टिकट ऑनलाइन भी प्राप्त की जा सकती है। सम्पूर्ण भारत में होम डिलीवरी सुविधा के लिए कोड स्कैन करें लॉग-इन करें अथवा मोबाइल पर सम्पर्क करें

vedicprakashan.com
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का ऑनलाइन स्टोर
96501 83336

भारत के परिवर्तन की नींव रखने वाले ☆ महर्षि दयानन्द के अमर वाक्य ☆

सबसे उत्तम आश्रम कौन सा?

संन्यासी लोगों को संसार छोड़ने का उपदेश देते और कई तो गृहस्थ को नर्क का द्वार तक बता देते थे, महर्षि इससे दुखी होकर लिखते हैं-

"जो कोई गृहाश्रम की निंदा करता है वह निन्दनीय है और जो प्रशंसा करता है वही प्रशंसनीय है।"

– सत्यार्थ प्रकाश सम॰ ४

महर्षि दयानन्द स्वयं संन्यासी थे, फिर भी उन्होंने गृहाश्रम को महान इसलिये बताया था कि वही सब आश्रमों का आधार है।

11

गृहस्थों के लिए उपदेश

स्त्री की प्रसन्नता से ही गृहस्थ की सफलता

"हे गृहस्थों! जिस कुल में भार्या से प्रसन्न पति और पति से भार्या सदा प्रसन्न रहती है, उसी कुल में निश्चित कल्याण होता है और दोनों परस्पर अप्रसन्न रहें तो उस कुल में नित्य कलह वास करता है।"

– सत्यार्थ प्रकाश

शब्दार्थ : भार्या – पत्नी

12

उपरोक्त वाक्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक "भारत के परिवर्तन क्रांति की नींव रखने वाले महर्षि के अमर वाक्य" से साभार नियमित स्तम्भ के रूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इन वाक्यों को पढ़कर आप महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों, सिद्धान्तों और आर्यसमाज की मान्यताओं से परिचित हो सकते हैं तथा सोशल मीडिया पर प्रसारित करके परोपकार में सहभागी भी बन सकते हैं। पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें अथवा दिया गया कोड स्कैन करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

साप्ताहिक स्वाध्याय

थियोसॉफी से सम्बन्ध

गतांक से आगे-

उन्हीं दिनों में मि॰ होम की Light and Shadows of Spiritualism नाम की पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसमें थियोसॉफी के लीडरों की पोल खोलने का यत्न किया गया। मि॰ कोलमैन की आलोचना और मि॰ होम के आक्रमणों ने थियोसॉफी के नेताओं की स्थिति असम्भव बना दी। ईसाई पहले ही खीझे हुए थे, Isis की पोल खुल जाने से थियोसॉफी के संस्थापक बड़ी विपदा में पड़े। अब तक कर्नल अल्कॉट और मैडम ब्लैवेट्स्की यदि कुछ थे तो Spiritualist थे, और कुछ नहीं थे। न वे हिन्दू थे, न बौद्ध थे। यदि आत्मा उनसे बातें करती थी तो किंग जान की। अमेरिका में उनकी स्थिति बहुत बिगड़ गई। उनके लिए उस देश में रहना असम्भव हो गया। यह दशा 1877 में हुई। मैडम ब्लैवेट्स्की ने उस समय एक पत्र लिखा, जिसका निम्न लिखित उद्धरण लेखिका की मानसिक दशा को चित्रित करके बताता है कि युगल को भारत की ओर प्रेरित करने का क्या कारण हुआ और 1878 में महर्षि दयानन्द को कर्नल अल्कॉट की जो चिट्ठी मिली, उसकी तह में क्या बात थी। पत्र में मैडम लिखती हैं-

"It is for this that am going forever to India, and for very shame and veñation, I want to go where no one will know my name. Home's malignity has ruined me forever in Europe." 'मैं इसलिए भारत जा रही हूं कि लज्जा और खिजलाहट से तंग आकर मैं ऐसी जगह जाना चाहती हूं जहां मेरा नाम भी कोई न जानता हो। होम के द्वेष ने यूरोप में सदा के लिए मेरा नाश कर दिया।'

इस प्रकार अमेरिका और यूरोप में बेइज्जत और बदनाम होकर थियोसॉफी के संस्थापकों ने भारत के भोले-भाले निवासियों का उद्धार करने का निश्चय किया। इतनी प्रस्तावना को पढ़कर पाठक समझ सकेंगे कि थियोसॉफी के नेताओं ने महर्षि दयानन्द को ऐसे नम्रताभरे पत्र क्यों लिखे। वे अमेरिका और यूरोप में बिल्कुल बदनाम हो चुके थे। वहां उनका रहना असम्भव था। भारत में पैर जमाने का यही उपाय था कि किसी शक्तिशाली व्यक्ति का आश्रय लिया जाय। श्रीयुत हरिश्चन्द्र चिन्तामणि से कर्नल अल्कॉट को महर्षि का परिचय मिला था। उस परिचय से लाभ उठाकर थियोसॉफी के प्रेसीडेण्ट ने महर्षि दयानन्द को अधीनता भरे पत्र लिखने आरम्भ किये।

इस परिच्छेद के प्रारंभ में जो पत्र दिया गया है, उसके पीछे थियोसॉफी की ओर से हरिश्चन्द्र चिन्तामणि द्वारा महर्षि जी के पास बराबर पत्र आते रहे। 21 मई के पत्र में कर्नल अल्कॉट लिखते हैं-

''जब मैं यह इशारा देता हूं कि हमारी सोसाइटी पण्डित दयानन्द सरस्वती की और मेरी पथदर्शकता में आर्यसमाज की शाखा विख्यात की जाय, तब मैं ऐसे बुद्धिमान् और पवित्र मनुष्य को शिक्षक और मार्गदर्शक मानने के कारण गर्व का अनुभव करता हूं।''

-क्रमशः

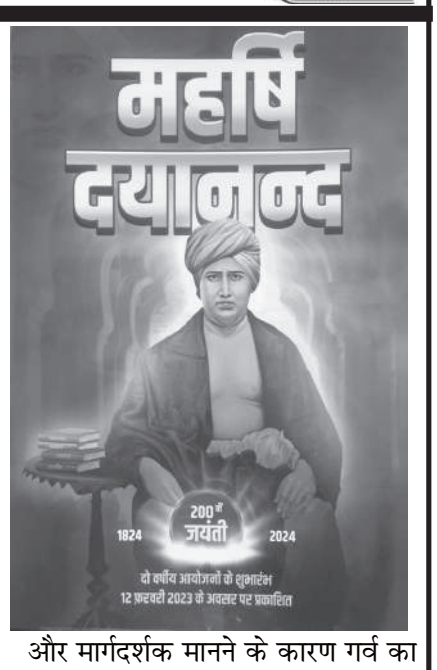

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Relation with Theosophy

The letter was from the head of the Theosophical Society. This society was established in America on 17th of November in 1875 AD. The Society was founded by the industry of Madame Blavatsky and Colonel Alcott. Madame Blavatsky was born in a German family settled in Russia. At the age of 17 she was married to NV Blavatsky. After three months of marriage, Madame Blavatsky ran away leaving her husband. After that Madame led a suspicious life for years, and while her husband was still alive, she established a relationship with a man named Matrovich. For a long time Madame Blavatsky lived with Matrovich, changing her name and posing as his married woman. A boy was also born from this relationship, about whom the madam later tried to convince the people by making many spiritual speculations. After leaving Matrovich's company, Madame lived for a long time in Cairo, the capital of Egypt. Here Madam got a chance to meet many magicians and yogis, from whom she came to know the secret of miracles, and herself started doing many manipulations. Madam came to Russia from Egypt in 1873, and started her livelihood by writing about spiritual education. The magic created in Egypt was very useful to madam here.

In April 1875, Madam married Michael Thatley, an Armenian. Madam told two lies at the time of this marriage. Even though her first husband was alive, she married another man by pretending to be a widow. She was 43 years old at this time, but she described herself as 36 years old. This marriage also could not remain stable for long. Soon there was a quarrel between the two, and divorce severed the false relationship. Being defamed in Russia, Madam took shelter in America and continued her existence by writing about spiritual knowledge. In 1874 Madam was introduced to Colonel Alcott. Colonel Alcott was formerly a soldier, but at that time he was engaged in the investigation of a spiritual phenomenon as a newspaper correspondent. Both of them met in a town called Chitandan, who earned their livelihood by discuissing about spiritiul knowldge, and together they realized that they were necessary for each other. Together they decided to try to increase the discussion of spiritual knowledge. Both used to write books and live with their income, but still the American people did not consider the knowledge given by them to be so valuable that both of them could live well from those books. There is a letter from Madam dated 18 July 1875 in which she writes-

"Here, you see, is my trouble- Tomorrow there will be nothing to eat- Something quite out the way must be invented- It is doubtful if Olcott's 'Miracle club' will help_ will fight to the last-"

'My difficulty is this. There is nothing to eat for tomorrow. A completely new method should be created. It is doubtful that Alcott's 'Miracle Assembly' will be of any help. I will fight till the end.'

There was also the problem of food. To overcome that problem, Colonel Alcott had formed a club called 'Miracle Club', but even that did not generate much income. Some books were written, food-suffering didn't go away from them. Then being fed up, the couple decided to form the Theosophical Society. The Society was established on 17 November 1875. The colonel became the head and the madam took over the work of the minister. .

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में सदस्यगण अपना शुल्क भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अतः ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2014 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1500/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। आप अपना शुल्क सीधे निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करा सकते हैं- " Arya Sandesh Saptahik "

A/c No. 1098101002787 IFSC Code: CNRB0001098

Canara Bank, Parliament Street, New Delhi

कृपया शुल्क जमा कराने के उपरान्त डिपोजिट स्लिप/मैसेज का फोटो 9540040322 पर अवश्य भेजें- ***सम्पादक***

JioTV Jio TV+
आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल
आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV

पृष्ठ 3 से आगे

कहा गया है कि मैं मृत्यु से भी पराजित नहीं होता। इसका मतलब है कि जो राजा होने का भाव है, वह मनुष्य की आत्मा के लिए ही संबोधन है, शरीर के लिए नहीं, शरीर तो बनता रहता है, मिटता रहता है। लेकिन आत्मतत्व कभी मिटता नहीं। शरीर मिट जाएगा तब भी आप रहेंगे, मरकर भी आप मरेंगे नहीं, यह सोच मृत्यु जैसे भय को भगा सकती है।

दूसरी बात, यदि भय की आंखों में झांकेंगे तो भय भागेगा। जितना आप डरते हैं उतनी ही भय की शक्ति बढ़ती है। लेकिन जब आप हिम्मत और साहस से आगे बढ़ते हैं तो भय पीछे हटता है और आपके अंदर शौर्य जागृत होता है, वीरता आती है। आपको मन से, आत्मा से संकल्प लेना होगा कि आप केवल भय से लड़ ही नहीं सकते, बल्कि उसे मार भगा सकते हो, ऐसा करने के साथ ही आप में निर्भय होकर विचरण करने की क्षमता आ जाएगी।

अज्ञान से भय उपजता है और ज्ञान आपको निर्भयता प्रदान करता है। इसीलिए, ईश्वर की भक्ति और आशीर्वाद भी आपको निर्भयता प्रदान करते हैं। सीधा-सा उदाहरण है यदि आपको धन कमाने की विधि का ज्ञान प्राप्त हो जाए तो आप निर्धनता से भयभीत नहीं होंगे। यदि आपको जीवन के वास्तविक अर्थ का ज्ञान हो जाए तो आप मृत्यु से कभी भय नहीं मानेंगे। ज्ञान डर को समाप्त कर देता है, इसीलिए ज्ञानी निर्भय होकर विचरण करते हैं। आगे मंत्र में कहा गया है-

सोम मा सुन्वन्तः याचता।। मंत्र के इस चरण का भाव है कि मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए और कल्याणकारी ऐश्वर्यो की प्राप्ति के लिए भगवान् से याचना करें। संसार में सबसे बड़ा दाता वही है, सब उसीसे प्राप्त करके सुख संपदा के मालिक बने हैं। लेकिन एक इनसान दूसरे के सामने हाथ फैलाता है, दीन-हीन बनकर याचना करता है। वैसे मनुष्य सामाजिक प्राणी है, यहां सबको एक दूसरे से काम पड़ता है, लेकिन मनुष्य स्वार्थ के अधीन होकर जब कहीं अनावश्यक हाथ जोड़ता है, पैर पकड़ता है, कहीं बाहें फैलाता है, चापलूसी करता है, निंदा-चुगली करता है, तो सच में वह अपने गौरव से अनजान होता है। देने वाला इनसान भी यह नहीं समझता कि जिस दाता की देनपाकर यह स्वयं दाता बना हुआ है, मांगने वाले को अपने दर पर मांगने के लिए मजबूर करना अच्छी बात नहीं है, वह सबसे बड़ा दाता भगवान् जितना दाता का है, उतना याचक भी है।

एक बार कोई जरूरतमंद व्यक्ति किसी राजा के पास कुछ मांगने के लिए गया। जैसे ही वह राजा के पास पहुंचा तो उसने देखा कि राजा दोनों हाथ कभी जोड़ता है, तो कभी फैलाता है और कभी आसमान की तरफ देखता है तो कभी धरती को प्रणाम करता है। उस याचक को लगा कि यह राजा तो अजीब-अजीब हरकतें कर रहा है, यह मुझे क्या दे सकता है, इसका तो दिमाग भी संतुलित नहीं लगता। यह सोचते-विचारते वह वहीं पर खड़ा हुआ सब ध्यान से देखता रहा।

थोड़ी देर के बाद जब राजा अपनी पूजा-प्रार्थना समाप्त करके आया तो उसने पूछा कि बताइए आपको क्या चाहिए, क्या जरूरत है? उस साधरण व्यक्ति ने राजा को प्रणाम करते हुए सरलता से प्रश्न किया कि आप पहले यह बताएं कि आप इतनी देर से क्या कर रहे थे। राजा ने कहा मैं भगवान् से प्रार्थना कर रहा था, उस व्यक्ति ने फिर पूछा कि प्रार्थना क्या होती है, इसमें क्या करते हैं, इसको करने से क्या मिलता है। राजा ने कहा-मैं भगवान् से बल-बुद्धि, धन, साम्राज्य और अपनी प्रजा के लिए सुख- शांति मांग रहा था। उस प्रभु की प्रार्थना से सब मनोरथ पूर्ण होते हैं। लेकिन तुम बताओ कि तुम्हें क्या चाहिए, उस साधरण से इनसान ने कहा कि जब आप राजा होकर भी संसार के सबसे बड़े राजा से मांगते हैं, तो फिर मैं क्यों आपसे मांगू, मैं भी उस विधाता से ही मांगूगा, जिससे मांगकर आप राजा बने हैं। इसलिए इनसान दूसरे इनसान का सम्मान तो करे लेकिन अगर कुछ मांगना है, तो भगवान् से मांगे।

मंत्र में आगे कहा गया है **'न मे पूरव: सख्ये रिषाथन** जिसका अर्थ है कि परमात्मा अपने पुत्र मनुष्य को संबोधित करते हुए कह रहे हैं कि मेरे (ईश्वर) के प्रति मित्र भाव को कभी समाप्त मत होने देना। मनुष्य के जीवन में एक जैसी स्थिति कभी नहीं रहती, जीवन में उतार-चढ़ाव आता ही आता है, लेकिन भगवान् को हर हाल में, हर काल में एक जैसे भाव में सर्वदा अपने अंग-संग अनुभव करना चाहिए।

- आचार्य अनिल शास्त्री

पृष्ठ 2 का शेष

सनातन धर्म रक्षक आर्य समाज – क्यों न जाए कुम्भ?

सबको बुलाया जाता था, शास्त्रार्थ होता था, जो हार जाता वह दूसरे के विचारों को स्वीकार कर लेता था।

कुम्भ का एक आख्यान ये भी मिलता है, कि एक समय प्रयाग के कुम्भ मेले में आदि शंकराचार्य प्रसिद्ध विद्वान कुमारिल भट्ट से मिलने आए थे। मगर कुमारिल भट्ट अपने गुरु से विश्वासघात करने के कारण आहत थे। वो शंकराचार्य से शास्त्रार्थ करने के पहले ही अग्नि में प्रवेश कर गए। शंकराचार्य से उनका कोई शास्त्रार्थ नहीं हो सका।

असल में बुद्ध के बाद बौद्ध मत का प्रचार तेजी से हो रहा था। शून्यवाद की नास्तिक मान्यताएँ अधिकाँश जनता को नास्तिक बनाती चली जा रही थी। तब एक सनातनी विद्वान कुमारिल भट्ट ने सोचा कि बौद्ध मतानुयायियों से शास्त्रार्थ करने से पूर्व बौद्ध धर्म का गहन अध्ययन होना चाहिए। इसके लिए वे तक्षशिला गए और पूरे पाँच वर्षो तक बौद्ध मत का क्रमबद्ध अध्ययन किया। जब शिक्षा पूर्ण हो गई तो चलने का अवसर आया। इस समय की प्रथा के अनुसार बौद्ध विश्वविद्यालयों के स्नातकों की यह प्रतिज्ञा करनी होती थी कि मैं आजीवन बौद्ध मत का प्रचार व प्रसार करूंगा तथा मत के प्रति आस्थावान रहूँगा।

यह प्रतिज्ञा लेकर कुमारिल भट्ट उलझन में थे क्योंकि करना तो था उन्हें वैदिक धर्म का प्रचार। बौद्ध मत का अध्ययन तो उनकी ही जड़े काटने के लिए किया था। झूठी प्रतिज्ञा का मतलब था कि गुरु के प्रति विश्वासघात तथा वचनभंग।

किंतु इस मानसिक संघर्ष के मध्य में उन्होंने अपना विवेक खोया नहीं, और क्या करना चाहिए यह निश्चय कर लिया। लौटकर उन्होंने वैदिक धर्म का धुँआधार प्रचार करना शुरू कर दिया। जन-जन तक वेदों का दिव्य संदेश पहुँचाया। बौद्ध मान्यताओं की धज्जियाँ उड़ा दी। अपने गहन अध्ययन के आधार पर चुन-चुन कर एक-एक बौद्ध और मान्यता को अपने वैदिक तथ्यों द्वारा काटा। मगर बाद में उन्हें प्रतीत हुआ कि उन्होंने प्रतिज्ञा लेकर अपने गुरु से द्रोह किया, इसलिए उन्होंने प्रयाग के कुम्भ मेले में आत्मदाह कर लिया। वो मंडन मिश्र और भवभूति के गुरु थे। यह भी कहा जाता है कि सम्राट हर्षवर्धन भी कुमारिल का प्रशंसक बन गया था।

दूसरा उदाहरण ये है कि 18वीं सदी तक आते-आते सदियों की गुलामी के कारण भारत में चारों ओर पाखंड का बोल-बाला था, अंधविश्वास अपने चरम पर था और समाज का बड़ा तपका दिशाहीन अवस्था में कार्य-व्यवहार कर रहा था। नारी शिक्षा समाप्त हो चुकी थी। संस्कृत सिर्फ एक वर्ग की भाषा रह गई थी। गुरुकुल समाप्त हो चुके थे। बलि प्रथा, सती प्रथा, छुआछूत चरम पर थी। 1867 हरिद्वार में कुंभ का आयोजन था। तब महर्षि दयानंद जी ने समाज में व्याप्त बुराइयों, पाखंड, अंधविश्वास के खिलाफ न सिर्फ आवाज उठाई, बल्कि उस वक्त हरिद्वार के भूपतवाला क्षेत्र में स्थापित अपने शिविर में पाखंड-खंडनी पताका को फहराकर इन्हें समाप्त करने के अपने संकल्प को जन आंदोलन बना दिया। लोगों को उन्होंने वेद का संदेश दिया, ध्यान, योग, समाधि का रहस्य बताया और कहा कि गंगा में स्नान से हम सिर्फ शरीर से स्वच्छ होते हैं, पाप मुक्त नहीं होते क्योंकि जो जैसा करेगा, वो वैसा जरूर भोगेगा। यही बात वेद कहते हैं और यही गीता का सार है तो क्या ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे हो गया? आर्य समाज तो सनातन धर्म का वह रक्षक है-जो हमेशा विज्ञान और तर्क के आधार पर शास्त्रोक्त बात कहता है। ज्योतिषपीठ प्रमुख स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद जी को अपना बयान वापस लेना चाहिए और गर्व से कहना चाहिए कि आर्य समाज सनातन धर्म की रक्षा के लिए न केवल लोगों को जागरूक किया बल्कि बलिदान भी दिए। किसी भी सनातन धर्म की संस्था का ऐसा गवह्नला इतिहास नहीं होगा जैसा आर्य समाज का है। उन्हें या तो खुले मंच से आर्य समाज के विद्वानों के साथ कुम्भ में शास्त्रार्थ करें या फिर अपने शब्द वापस लें ...।

– सम्पादक

⑧ साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 6 जनवरी, 2025 से रविवार 12 जनवरी, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 09-10-11/01/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 08, जनवरी, 2025

प्रतिष्ठा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

प्रथम पुरस्कार : 1 लाख रुपये एवं विशेष उपहार।
द्वितीय पुरस्कार : 51 हजार एवं विशेष उपहार (2)
तृतीय पुरस्कार : 31 हजार एवं विशेष उपहार (3)
चतुर्थ पुरस्कार : 5100/- एवं विशेष उपहार (25)
पांचवा पुरस्कार : नकद 2100/- रुपये (100)
छठा पुरस्कार : नकद 1000/- रुपये (250)
सातवां पुरस्कार : नकद 500/- रुपये (250)

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

नियम व शर्तें -

1. इस प्रतियोगिता में अधिकतम 18 वर्ष तक की आयु के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। सभी प्रश्नोत्तर इसी कॉमिक पुस्तिका में हैं।

2. उत्तर पत्र पूर्ण रूप से भरकर दिए गए कॉलम में अपना व विद्यालय का पूरा नाम व पता (पिन कोड सहित), फोन नम्बर, आयु, अवश्य भरें तथा पते के अन्त में राज्य का नाम अवश्य लिखें। (यदि विद्यालय के माध्यम से भाग न ले रहे हों तो सम्बन्धित संस्था का नाम अवश्य भरें। जैसे गुरुकुल, आर्य समाज, आर्यवीर दल की शाखा आदि।)

3. प्रश्नपत्र को भरकर '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001**' के पते पर (प्रश्नोत्तरी को फोल्ड करके लिफाफे में) भेजें अथवा विद्यालय/संस्था की ओर से सभी प्रश्न उत्तर के साथ कॉमिक एकत्रित करके भी भेजे जा सकते हैं।

4. दिनांक **1 सितम्बर 2025** से पूर्व प्राप्त होने वाले उत्तर पत्र ही प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे। यह तिथि आगे बढ़ाने का अधिकार संयोजक का होगा।

5. उत्तर पत्रों की पूर्ण जांच के पश्चात् सभी ठीक उत्तर वाले पत्रों को पुरस्कार योजना में सम्मिलित किया जाएगा। पुरस्कार संयोजक समिति द्वारा बनाई गई तीन सदस्यीय निर्णायक समिति द्वारा अन्तिम रूप से घोषित किया जाएगा।

6. निर्णायकों की समिति का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा तथा उसे कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकेगी।

7. पुरस्कृत/विजेता बच्चों के नाम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र '**साप्ताहिक आर्यसन्देश**' में दिए जायेंगे तथा पृथक पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा एवं बच्चों के नाम सभा द्वारा संचालित वेबसाइट **www.thearyasamaj.org** पर प्रदर्शित किये जायेंगे।

8. सभी पुरस्कार '**अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2025**' में दिल्ली के अवसर पर प्रदान किए जायेंगे जिसकी सूचना विजेताओं को अग्रिम भेजी जाएगी। यह योजना हिन्दी तथा अन्य भाषाओं की कॉमिक पर समान रूप से लागू होगी।

9. इस कॉमिक को सुरक्षित रखें क्योंकि प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार लेने हेतु कॉमिक की प्रति लाना / भेजना अनिवार्य होगा। - ***संयोजक***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह